अनुच्छेद लेखन

(ख) पेड़ की आत्मकथा

मैं एक पेड़ हूँ। आज से करीब तीस-चालीस साल पहले मेरा जन्म हुआ। मुझे आज भी वह पल याद है जब मैंने पहली बार सूर्य की किरणों को महसूस किया। जब मेरा आकार छोटा था तो मुझे जानवरों से खतरा रहता था, पर जब मेरा आकार बड़ा हो गया तो यह खतरा खत्म हो गया। अब बड़ा होकर मैं मनुष्यों को अपनी सेवाएँ देता हूँ। उन्हें अपनी शीतल छाया, फल-फूल, लकड़ी और सबसे अमूल्य ऑक्सीजन प्रदान करता हूँ, परंतु आज मानव अपनी ज़रूरतों के कारण मुझ जैसे लाखों पेड़ों को काटता जा रहा है। अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ। पर यदि मुझे कोई काटे न तो मुझे हज़ारों साल यह दुनिया देखनी है। मैं बहुत ही भाग्यशाली हूँ।

(ग) मेरी प्रिय मित्र

मेरी सबसे अच्छी मित्र का नाम मधु है। वह बड़ों का कहना मानती है। वह अध्यापकों पर पूरी श्रद्धा रखती है। उनकी आज्ञा का पालन करती है। वह हमेशा साफ़-सुथरे कपड़े पहनती है। वह प्रतिदिन अपना पाठ याद करके आती है। हम दोनों कक्षा में सदैव साथ बैठते हैं। वह कभी किसी की निंदा नहीं करती। वह कभी क्रोध भी नहीं करती। हमेशा मुस्कुराती रहती है। एक दिन जब मुझे बुखार आ गया और मैं विद्यालय नहीं गई तो वह छुट्टी होते ही मेरे घर आई और मेरा हाल-चाल पूछा। कक्षा में अध्यापक ने क्या कार्य करवाया उसकी जानकारी भी दी। मेरे माता-पिता भी मधु से बहुत प्यार करते हैं। उसकी संगति बहुत अच्छी है। ईश्वर करे कि वह जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करे।

18 कथा-पठन-लेखन

अभ्यास

उत्तरमाला

1. एक शेर शिकारी के पिंजरे में बंद था। वह पुकार रहा था- "कोई मुझे बाहर निकालो। मैं उसे **इनाम** दूँगा। उधर से निकलते हुए एक मुसाफ़िर ने पूछा- "मैं **दरवाज़ा** खोलता हूँ। तुम मुझे खाओगे तो नहीं?" शेर बोला- "नहीं भाई! मैं तो तुम्हें सोने का **कंगन** दूँगा।" मुसाफ़िर ने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। शेर बाहर आते ही मुसाफ़िर की ओर लपका। मुसाफ़िर भागने लगा। सामने से एक **लोमड़ी** आ रही थी। उसने शेर से रुकने को कहा और पूछा- "तुम इस **आदमी** को क्यों खाना चाहते हो?" शेर बोला- "इसने मुझे पिंजरे से **बाहर** निकाला है। मैं वहाँ आराम से सो रहा था।" लोमड़ी ने कहा- "तुम इस पिंजरे में आ ही नहीं **सकते**।" पिंजरा छोटा है और तुम इतने **मोटे**! अगर तुम इसमें थे तो अंदर बैठकर दिखाओ।" शेर जैसे ही पिंजरे के **अंदर** गया, लोमड़ी ने झट से दरवाज़ा बंद कर दिया। मुसाफ़िर खुशी-खुशी आगे **चला** गया।

2. कबूतर आसमान में एक साथ उड़ रहे थे। उसमें एक बूढ़ा कबूतर भी था। वे धूप से परेशान होने के कारण एक पेड़ पर बैठ गए। तभी उन्हें ज़मीन पर

चावल के दाने दिखाए दिए। वे नीचे उतरने का विचार करने लगे। बूढ़े कबूतर ने कहा कि जंगल में चावल के दाने नहीं आ सकते। इसमें कोई धोखा है। दूसरे कबूतरों ने उसकी बात नहीं मानी। वे तुरंत नीचे उतर आए। वहाँ बहेलिए ने जाल फैलाया था। सभी कबूतर जाल में फँसकर पंख फड़फड़ाने लगे। बूढ़े कबूतर ने कहा कि घबराओ मत। अब हमें एक साथ अपनी पूरी ताकत से एक ही दिशा में उड़ना चाहिए। तभी उनकी नज़र अपनी ओर आते बहेलिए पर पड़ी। सभी कबूतर जाल सहित एक ही दिशा में उड़ने लगे। बहेलिया उन्हें पकड़ न सका। सभी कबूतर उड़ते हुए बहुत दूर दूसरे जंगल में चले गए। वहाँ बूढ़े कबूतर का दोस्त हिरण्यक चूहा रहता था। उसने जाल काटकर कबूतरों को आज़ाद कर दिया।

शिक्षा- एकता में बल होता है। हमें अपने से बड़ों की बात माननी चाहिए।

उत्तरमाला

अभ्यास

1. (क) रुपया (ख) विशेष (ग) परीक्षा (घ) प्रतिज्ञा
   (ङ) पृथ्वी (च) नमस्कार (छ) विद्यालय (ज) संप्रदान
   (झ) ऐतिहासिक (ञ) अनुच्छेद (ट) प्रार्थना (ठ) निश्चित
2. (क) तुम्हारी बात मुझे पसंद नहीं। (ख) चोर को मृत्युदंड मिला।
   (ग) आज का क्या समाचार है? (घ) उसके पिता जी शिक्षक हैं।
   (ङ) भैंस का गरम दूध ताकतवर होता है।
   (च) हमने अपना काम कर लिया। (छ) मुझे कुछ किताबें चाहिए।
   (ज) ये बच्चे गाना गा रहे हैं। (झ) मैं खाना खाकर आता हूँ।
   (ञ) वाह! कितना सुंदर फूल है। (ट) यह गुलाब है।
   (ठ) पानी की एक बोतल लाओ। (ड) आज तेज़ धूप है।
   (ढ) चोर के हाथ में हथकड़ियाँ थीं।